ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

आधुनिक जनसंचार साधन एंव सामाजिक परिवर्तन के प्रति ग्रामीण महिलाओं के अभिमत

(जनपद भरतपुर (राजस्थान) के विशेष संदर्भ में)

Laxmi, Ph. D.

Associate Professor – Department Of Sociology

M S J Government (P.G.) College Bharatpur; Rajasthan

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

निस्सन्देह; परम्परागत साधनों की तुलना में आधुनिक जनसंचार साधन सामाजिक परिवर्तन में अहम भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। आधुनिक लोकप्रिय साधन के रूप में दूरदर्शन; मानव जीवन के प्रत्येक पहलू पर सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। कहना अनुपयुक्त न होगा कि दूरदर्शन आधुनिक जनसंचार साधनों में मनोरंजन का सबसे महत्वपूर्ण तथा अत्याधुनिक साधन ही नहीं है अपितु सबसे सस्ता तथा उपलब्ध साधन है और सशक्त माध्यम भी; क्यों कि सम्प्रेषण के साथ–साथ दूरदर्शन के प्रसारण व कार्यक्रम आज अत्यन्त उन्नत अवस्था में हैं; घर बैठे ही विश्व निहारा जा सकता है; कहाँ तथा कब; क्या हो रहा है; प्रत्यक्ष रूप में देख जा सकता है। आज पृथक–पृथक जानकारियों के अलग–अलग चैनल्स उपलब्ध हैं; विशेष प्रसारण सेवाओं ने तो वर्तमान युग को ''सूचना का युग'' साबित कर दिया है। लेकिन हमें नहीं भूलना चाहिए कि हर चीज के दो पहलू होते हैं; वैसे ही दूरदर्शन देखने से दर्शकों पर पड़ने वाले प्रभाव भी दो प्रकार के हैं; जो दर्शकों के ग्रहण करने की दिशा (सोच) पर निर्भर करता है कि वे उससे क्या और कैसी नसीयतें ले रहे हैं। ''किशोर'' जिनकी कि अवस्था भटकाव व विचलन की होती है; पर दूरदर्शन के प्रभावों का इस अध्याय में, परिजनों के दृष्टिकोणों के प्रसंग में; समाजशास्त्रीय मूल्यांकन किया गया है कि अधिक समय दूरदर्शन देखने, अश्लील मनोरंजन, शिक्षाध्ययन में बाधा, अनैतिकता में वृद्धि, अपराधों में वृद्धि, लोक लाज के प्रति बदलती मानसिकता, भारतीय संस्कृति के प्रति इत्यादि सन्दर्भों में उनके किशोरों पर कैसा प्रभाव पड़ रहा है ? और उनके परिजन कैसा अनुभव करते हैं ? अध्ययन से प्राप्त तथ्यों पर अग्रांकित तालिकाएं संक्षिप्त प्रकाश डालती हैं– सर्वप्रथम प्रत्येक किशोर न्यादर्श से प्रश्न किया गया कि– ''अश्लील मनोरंजन या फिर अश्लील दृश्य दूरदर्शन पर आते समय आपके संरक्षक या परिजनों का दृष्टिकोण क्या होता है ?'' न्यादर्शों से प्राप्त उत्तरों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (1) : ''अश्लील मनोरंजन के प्रति दृष्टिकोण'' न्यादर्शों केप्रत्युत्तर

क्रमांक	अश्लील दृश्य आने पर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	दूरदर्शन बन्द कर दिया जाय	75	25.00
2.	हम दूरदर्शन देखना बन्द कर दें	93	31.00
3.	हमें पढ़ने को कहते हैं	64	21.33
4.	संरक्षक स्वयं आंखें नीची कर लेते हैं	68	22.67
	समस्त योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा तत्सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनार्थ चयनित कुल 300 किशोर न्यादर्शों में से दूरदर्शन पर अश्लील दृश्य पर्दे पर आने के समय 75(25.00ः) न्यादर्शों के परिजनों का सोच होता है कि दूरदर्शन बन्द कर दिया जाय ताकि हम पर अश्लील मनोरंजन का दुष्प्रभाव न पड़े, 93(31.00ः) ने बताया है कि परिजनों का दृष्टिकोण होता है कि दूरदर्शन देखना बन्द कर दें। इसके लिए वे ऐसे दृश्य पर्दे पर आते ही हमसे कुछ लाने के लिए कहते हैं ताकि हम वहां से कहीं चले जांय और अश्लील दृश्य हमारी दृष्टि से ओझल होकर बिना देखे निकल जाय; तथा 64(21.33ः) न्यादर्शों ने बताया एवं निःसंकोच स्वीकार किया है कि अश्लील मनोरंजन न करने की हिदायद देते हैं और दूरदर्शन बन्द करके हमसे पढ़ने की कहते हैं; उनका सोच होता है कि हम पर दूरदर्शन के अश्लील चित्रों (दृश्यों) का प्रभाव न पड़े; जबकि 68(22.67ः) न्यादर्शों ने निर्विवाद व निःसंकोच स्वीकार किया है कि पर्दे पर अश्लील चित्र आने पर अपनी आंखें (निगाहें) नीची कर लेते हैं ताकि ऐसे दृश्य निकल जांय अर्थात् वे स्वयं पर्दा कर लेते हैं। इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में स्पष्ट है कि– ''अश्लील चित्र (दृश्य) दूरदर्शन के पर्दे पर आते ही परिजनों का सोच होता है कि हम उसे न देखें, क्योंकि अश्लील मनोरंजन से किशोरों प्रत्यक्षतः तथा तत्काल दुष्प्रभाव पड़ता है।'' उनका सोच होता है कि या तो दूरदर्शन बन्द कर दिया जाय, या फिर हम वहां से उठकर चले जायं या फिर परिजन ही स्वयं शर्म से आंखें नीची कर लेते हैं। परिजनों से पूछा गया तो उन्होंने स्वीकार किया है कि ''दूरदर्शन पर आने वाले अश्लील चित्रों/दृश्यों ने किशोरों को लज्जाहीन बना दिया है। बड़े छोटों के मध्य शर्म नाम की कोई चीज शेष नहीं रह गयी है, सबसे बुरा लगता है जब किशोरवय/युवा बेटी परिजनों माता–पिता के साथ बैठी दूरदर्शन देख रही हो; और अश्लील चित्र आ जाय।'' न्यादर्शों से पुनः पूरक प्रश्न किया गया कि ''क्या आपके परिजन अनुभूति करते हैं कि दूरदर्शन देखने से शिक्षा/अध्ययन में बाधा (ब्यवधान) होता है?'' सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (2) : ''क्या आपके परिजन अनुभूति करते हैं कि दूरदर्शन देखने से शिक्षा/अध्ययन में बाधा (ब्यवधान) होता है ?'' न्यादर्शों के अनुसार

क्र0	शिक्षा/अध्ययन में व्यवधान के प्रति	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हां	249	83.00
2.	नहीं	––	00.00
3.	उदासीन 51	17.00	
4.	अनुत्तरित	––	00.00
समस्त	योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि दूरदर्शन देखने से शिक्षा में बाधा उत्पन्न होने के प्रसंग में न्यादर्शों के परिजनों में से 249(83.00:) न्यादर्शों ने हाँ तथा 15(17.00:) न्यादर्शों ने उदासीन अनुभव करते हैं; ऐसा स्वीकार किया है। इन तथ्यों के प्रकाश में स्पष्ट होता है कि परिजनों के विचार में दूरदर्शन देखने से अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती है। कारण पूछे जाने पर बताया कि शैक्षिक कार्यक्रमों को छोड़कर अधिकांशतः कार्यक्रम/सीरियल मनोरंजनार्थ आते हैं; तो कुछ अत्यधिक गन्दे। गन्दे/भद्दे रोल्स, किशोरों की मानसिकता को कुप्रभावित करते हैं एवं उन पर दुष्प्रभाव डालते हैं।'' अनैतिकता में वृद्धि के प्रति उनके दृष्टिकोणों को भी जानने का प्रयास किया गया है। न्यादर्शों से प्रश्न किया गया कि– ''क्या आपके माता–पिता यह सोचते हैं कि दूरदर्शन देखने से अनैतिकता में वृद्धि होती है ?'' सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. (3) : ''क्या आपके माता–पिता (परिजन) यह सोचते हैं कि दूरदर्शन देखने से अनैतिकता में वृद्धि होती है ?'' प्रत्युत्तर

क्र0	प्रश्न का प्रत्युत्तर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हां	87	29.00
2.	नहीं	183	61.00
3.	उदासीन	30	10.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट होता है कि दूरदर्शन देखने से अनैतिकता में वृद्धि होती है; के सम्बन्ध में मात्र 87(29.00ः) न्यादर्शों ने ''हां'' तथा सर्वाधिक 183(61.00ः) न्यादर्शों ने ''नहीं'' तथा 30(10.00ः) न्यादर्शों ने ''उदासीन'' प्रत्युत्तर प्रदान किए हैं। इस प्रश्न पर एक भी सूचनादाता अनुत्तरित नहीं पाया गया। इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में कहा जा सकता है कि प्रतिशतता को दृष्टिगत करते हुए कहा जा सकता है कि ''दूरदर्शन देखने से न्यून मात्रा में अनैतिकता बढ़ रही है।''

अनुसंधित्सु ने सभी 300 न्यादर्शों से यह भी प्रश्न किया गया है कि– ''क्या दूरदर्शन देखने से अपराधों में वृद्धि हो रही है? इस प्रसंग में आपके परिजनों का क्या सोच है?'' सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका नं. (4) : आपके परिजनों के सोच में ''क्या दूरदर्शन देखने से अपराधों में वृद्धि हो रही है?'' प्रत्युत्तर

क्र0	प्रश्न का प्रत्युत्तर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	हां 120	40.00	
2.	नहीं	138	46.00
3.	उदासीन	42	14.00
4.	अनुत्तरित	––	00.00
	समस्त योग	300	00.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण तथा सम्बन्धित विवेचन से स्पष्ट है कि अध्ययन किए गए कुल 300 किशोरों के परिजनों के सोच के अनुसार कि दूरदर्शन देखने से किशोरों में अपराधों में वृद्धि के प्रसंग में 120(40.00ः) ने ''हां'' कहा है जबकि 138(46.00ः) न्यादर्शों ने ''नहीं'' कहा है। 42(14.00ः) न्यादर्श इस प्रश्न पर उदासीन/तटस्थ रहे हैं। कोई भी न्यादर्श इस प्रश्न पर अनुत्तरित नहीं रहा है। इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्ष बतौर यह कहा जा सकता है कि न्यादर्शों के परिजनों की दृष्टि में दूरदर्शन देखने से आंशिक रूप से अपराधों में भी वृद्धि होती है। पुनः सूचनादाताओं से (पृथक–पृथक) प्रश्न किया गया कि– ''लोक लाज के प्रति आपके परिजनों का दृष्टिकोण कैसा है?'' दूरदर्शन देखने से लोक लाज पर प्रभाव के प्रति सर्वेक्षण से प्राप्त परिजनों के दृष्टिकोण के प्रसंग में प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका 5) : दूरदर्शन देखने से लोक लाज पर प्रभाव के प्रति परिजनों के दृष्टिकोण के प्रसंग में न्यादर्शों के सोच

क्रमांक	प्रश्न का प्रत्युत्तर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	लोक लाज में कमी आयी है	189	63.00
2.	कोई प्रभाव नहीं पड़ा है	63	21.00
3.	उदासीन प्रत्युत्तर दिए	48	16.00
4.	अनुत्तरित रहे	--	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि अध्ययन किए गए कुल 300 न्यादर्शों में से 189(63.00:) न्यादर्शों के कथनानुसार उनके परिजनों की दृष्टि में दूरदर्शन देखने से लोक लाज में कमी आयी है, जबकि 63(21.00:) न्यादर्शों के कथनानुसार उनके परिजनों की दृष्टि में दूरदर्शन देखने से किशोरों में लोकलाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। मात्र 48(16.00:) न्यादर्श इस प्रश्न पर उदासीन उत्तर प्रदान करने वाले पाए गए हैं। ऐसा कोई सूचनादाता नहीं मिला जो अनुत्तरित रहा हो। इन प्राथमिक तथ्यों के आलोक में निष्कर्ष स्थापित किया जा सकता है कि– ''दूरदर्शन से परिवारों की लोक लाज कुप्रभावित हुई है।'' उन्होंने बताया कि कुछ सीरेल/विज्ञान ऐसे आते हैं कि देखते ही सिर लज्जा/शर्म से स्वतः ही झुक जाता है; यथा एड्स का विज्ञापन, परिवार कल्याण कार्यक्रम, निरोध का विज्ञापन, फैशन शो के नग्न प्रदर्शन आदि। निःसन्देह दूरदर्शन ने माँ–बेटी, पिता पुत्र, सास बहू, भाई बहिन के मध्य शर्म रूपी सामाजिक दूरी कम की है, और निर्लज्जता में वृद्धि की है। अनुसंधित्सु द्वारा पुनः दूरदर्शन के दुष्प्रभावों से ''बदलती भारतीय संस्कृति के प्रति; आपके परिजनों के दृष्टिकोण'' कैसे हैं ? सर्वेक्षण से प्राप्त प्राथमिक तथ्यों पर निम्न तालिका संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (6) : ''दूरदर्शन के प्रभावों से बदलती भारतीय संस्कृति के प्रति, आपके परिजनों के दृष्टिकोण'' क्या हैं ?

क्र0	न्यादर्शों द्वारा प्रदत्तर प्रत्युत्तर	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	भारतीय संस्कृति तेजी के साथ बदली है	243	81.00
2.	भारतीय संस्कृति पर कोई प्रभाव नहीं	--	00.00
3.	उदासीन तटस्थ प्रत्युत्तर दिए	57	19.00
4.	अनुत्तरित रहे हैं	--	00.00
	समस्त योग	300	100.00

प्रस्तुत तालिका के आंकड़ों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि कुल 300 न्यादर्शों में से 243 (81.00:) न्यादर्शों ने यह स्वीकार किया है कि उनके परिजनों के अभिमतों के अनुसार दूरदर्शन के प्रभाव से भारतीय संस्कृति तेजी के साथ बदल रही है।

हमारे मूल्य, आदर्श, सांस्कृतिक प्रतिमान आदि प्रभावित हो रहे हैं। भारतीय संस्कृति पर; पाश्चात्य संस्कृति का आक्रमण जैसा प्रतीत होता है; बदलती भारतीय संस्कृति के प्रति 57(19.00:) न्यादर्शों ने उदासीन अभिमत ब्यक्त किए है। नकारात्मक उत्तर प्रदान करने वाला तथा अनुत्तरित एक भी सूचनादाता नहीं पाया गया है। इन प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्ष उद्घाटित किया जा सकता है कि– ''दूरदर्शन के प्रभावों के कारण भारतीय संस्कृति तेजी के साथ परिवर्तित हो रही है, मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव दृष्टब्य हैं।''

निम्न तालिका ''किशोरों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि के सम्बन्ध में परिजनों के दृष्टिकोणों पर'' संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका (7) : ''किशोरों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि के प्रति परिजनों के सोच''

क्र0	दूरदर्शन के प्रभाव के प्रति सोच	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1.	दूरदर्शन से सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है	228	76.00
2.	दूरदर्शन से सामान्य ज्ञान में वृद्धि नहीं हुई	--	00.00
3.	उदासीन/तटस्थ प्रत्युत्तर	72	24.00
4.	अनुत्तरित रहे	--	00.00
	समस्त योग	300	100.00

उपरोक्त तालिका के अन्तर्गत प्रदर्शित प्राथमिक आंकड़ों के विश्लेषण एवं विवेचन से स्पष्ट होता है कि अध्ययनार्थ चयनित कुल 300 न्यादर्शों के परिजनों में से 228 (76. 00:) न्यादर्शों के परिजनों की मान्यता है कि दूरदर्शन से किशोरों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई जबकि 72(24.00:) न्यादर्शों के परिजनों के दृष्टिकोण उदासीन पाए गए हैं उल्लेखनीय है कि नकारात्मक दृष्टिकोंण दर्शाने वाला एक भी सूचनादाता नहीं पाया गया है और न ही कोई न्यादर्श अनुत्तरित पाया गया है। इन समस्त प्राथमिक तथ्यों के प्रकाश में निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ''दूरदर्शन से किशोरों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है।'' कारण यह है कि दूरदर्शन पर शिक्षाप्रद, विकासोन्मुखी, ज्ञान में अभिवृद्धि करने वाले, आधुनिकतम आविष्कार विश्व पटल रूप में दिखाए जाते हैं जो किशोरों के सामान्य ज्ञानार्जन वृद्धि में रचनात्मक/सृजनात्मक भूमिका निभाते हैं।

निम्न आनुभविक निष्कर्ष संज्ञान में आते हैं–

(क) किशोर एवं किशोरियों पर दूरदर्शन के प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों प्रभाव पड़ते हैं।

(ख) किशोर एवं किशोरियों पर दूरदर्शन से पड़ने वाले प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों प्रकार के परिलक्षित हुए हैं।

(ग) दूरदर्शन देखने के कारण, यदि गृहकार्य न कर पाए हों तो वे मानसिक तनाव महसूस करते हैं।

(घ) अधिक समय तक दूरदर्शन देखने से आंखों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है; आंखें थकावट महसूस करती हैं भविष्य में आँखें कमजोर हो सकती हैं।

(ड) किशोर–किशोरियाँ अश्लील दृश्यों/भूमिकाओं को देखना पसन्द नहीं करते, अपितु वहाँ से उठकर चले जाते हैं; या फिर शर्म के कारण सिर नीचा कर लेते हैं; मानो वे देख ही न रहे हों।

(च) दूरदर्शन पर हिंसात्मक ब्यवहार देकर; वे अपने भाई–बहिनों के साथ ऐसे ब्यवहार की पुनरावृत्ति नहीं करते।

(छ) दूरदर्शन देखने की चर्चा वे अपने शिक्षकों से नहीं करते क्यों कि उन्हें भय व शंका रहती है कि उन पर शिक्षकों की डांट न पड़ जाय। इसलिए इस विन्दु पर वे चर्चा ही नहीं करते।

(ज) नए फैशन; वे दूरदर्शन से ही अनुकरण करके सीखते हैं।

(झ) न्यादर्शों का सोच है कि दूरदर्शन से धूम्रपान, मद्यपान, पान मसाला, गुटखा, फरेब, अपराध करना, अनैतिकता आदि को समाज में बढ़ावा मिला है एवं मानव ब्यवहार प्रभावित हुआ है।

(ट) दूरदर्शन पर आए विज्ञापनों से किशोर–किशोरियां विशेषतः प्रभावित होते हैं।

(ठ) दूरदर्शन देखने से सामान्य ज्ञान में वृद्धि हुई है; ऐसी स्वीकारोक्तियां उन्होंने की हैं।

संदर्भ

Saxena Gopal ; Television in India ; Changes & Challengers, Vikas Publishing House, New Delhi, 2006:4.

Beyed J. (2005); The History of Television in India, Punguir Book Publishers (Pvt. Ltd) New Delhi: 110.

Beyed J. (et.al); Development of Television in India; Ibid p.6.

Saxena Gopal; Television in India: Changes & Challengers, Vikas Publishing House, New Delhi 2006 p.12.

…….. ; Ibid Vikash Publishing House, New Delhi, 1986, p.14.

Rao Bhaskara ; Social effects of Mass Media, Gyan Publishers & Distributors, New Delhi, 2007 p.62.

Narayanan A; Impact of Television on Viewers, Somaiya Pub. (Pvt. Ltd.) Bombay, 1987 p.201.

Verma Preeti (et.al); Child Psychology, Vinod Pustak Mandir Prakashan, Agra (U.P.), 2003 p.167.

…….. ; Ibid, page-168.

Frank L.K.; Child Development & the Television; Mc-Grow Hill Book Co., 2009, p.80.